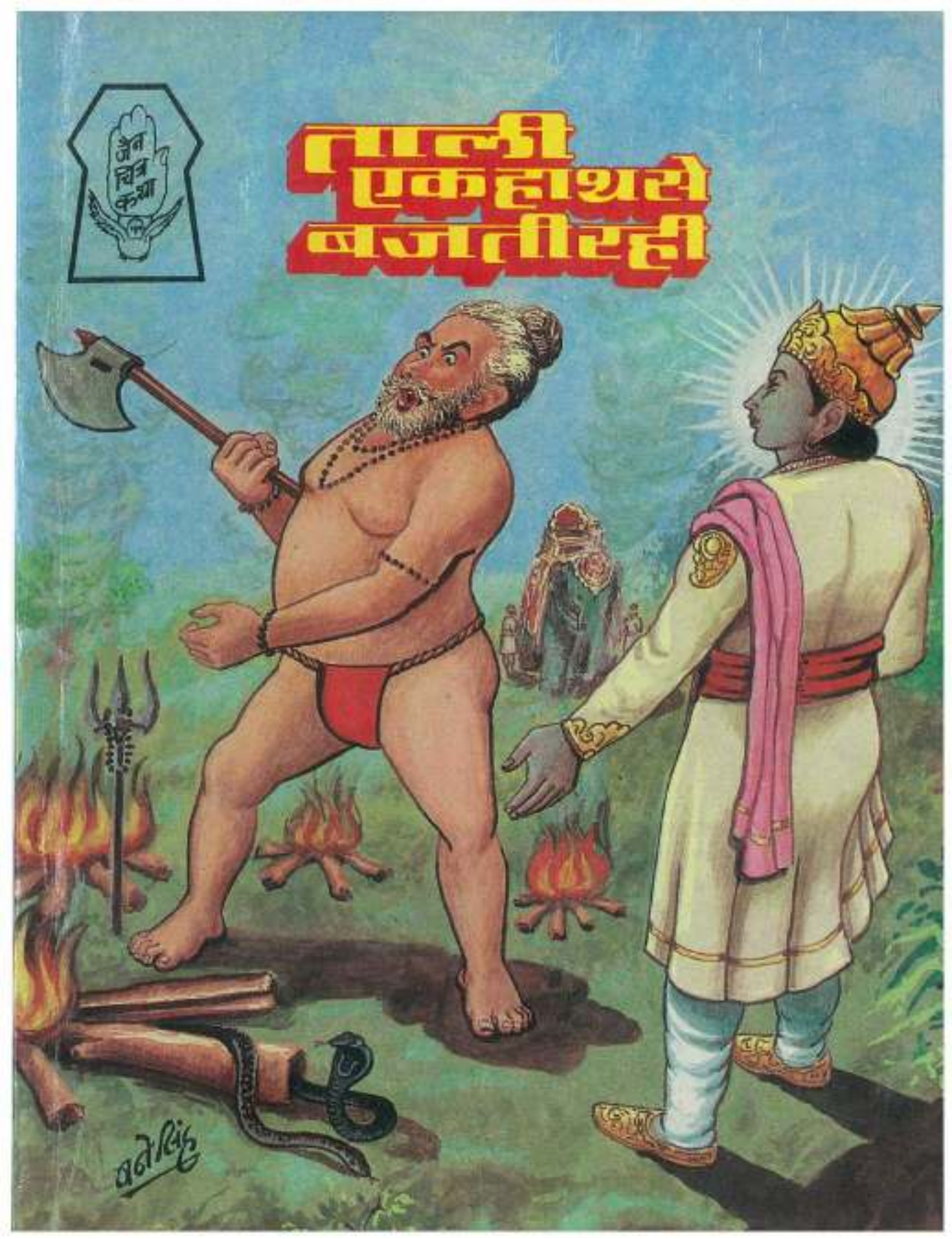

जैन चित्र कथा
ताली एक हाथ से बजती रही

ताली एक हाथ से बजती रही

सम्पादकीय

भगवान पार्श्वनाथ जन जन के श्रद्धाभाजन हैं। उनका वर्तमान तथा पूर्व भवों का जीवन अलौकिक घटनाओं से भरा हुआ है। मरुभूमि के प्रति कमठ का एक पक्षीय वैर देख कर आंखों के सामने सौजन्य और दौर्जन्य का सच्चा चित्र उपस्थित हो जाता है। प्रशमगुण के अवतार मरुभूति के जीव को जो आगे चल कर पार्श्वनाथ तीर्थंकर बना है। कितना कष्ट दिया? यह देख कर हृदय में कमठ के जीव की दुष्टता और मरुभूमि के जीव की सहिष्णुता का दृष्य सामने आ जाता है। कमठ के जीव ने पूर्वभव तथा वर्तमान भव में भी उसने कितना भयंकर उपसर्ग उन पर किया था। यह पढ़ कर शरीर रोमान्चित हो जाता है। अन्त में धरणेन्द्र और पद्मावती के द्वारा जो कि कुमार पार्श्वनाथ के मुखार विन्द से सदुपदेश सुनकर नाग नागनी की पर्याय छोड़ देव-देवी हुए थे। उनके कारण भयंकर उपसर्ग का निवारण हुआ और मुनिराज पार्श्वनाथ केवल ज्ञान प्राप्त कर भगवान बन गये। कमठ का जीव अपने कुकृत्य का प्रायश्चित कर सदा के लिए निर्वैर हो गया।

साहित्य सेवा में सकल कीर्ति का महान योगदान रहा उन्होंने साधु जीवन के प्रत्येक क्षण का उपयोग किया। प्रस्तुत कृति पार्श्वनाथ पुराण के आधार पर तैयार की गई है। जैन चित्र कथा के माध्यम से शिक्षाप्रद कहानियां प्रकाशित हो कर आधुनिक पीढ़ी के जीवन निर्माण में सहयोग प्रदान करेंगी।

धर्मचंद शास्त्री

सम्पादक :- धर्मचंद शास्त्री
लेखक :- डा. मूलचंद जी जैन मु. नगर
चित्रकार :- बेनसिंह
प्रकाशक :- आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थ माला, गोधा सदन अलसी सर हाऊस
संसार चंद रोड जयपुर राजस्थान
मुद्रक :- सैनानी ऑफसैट
फोन : 2282885, निवास 2272796
मूल्य12/-

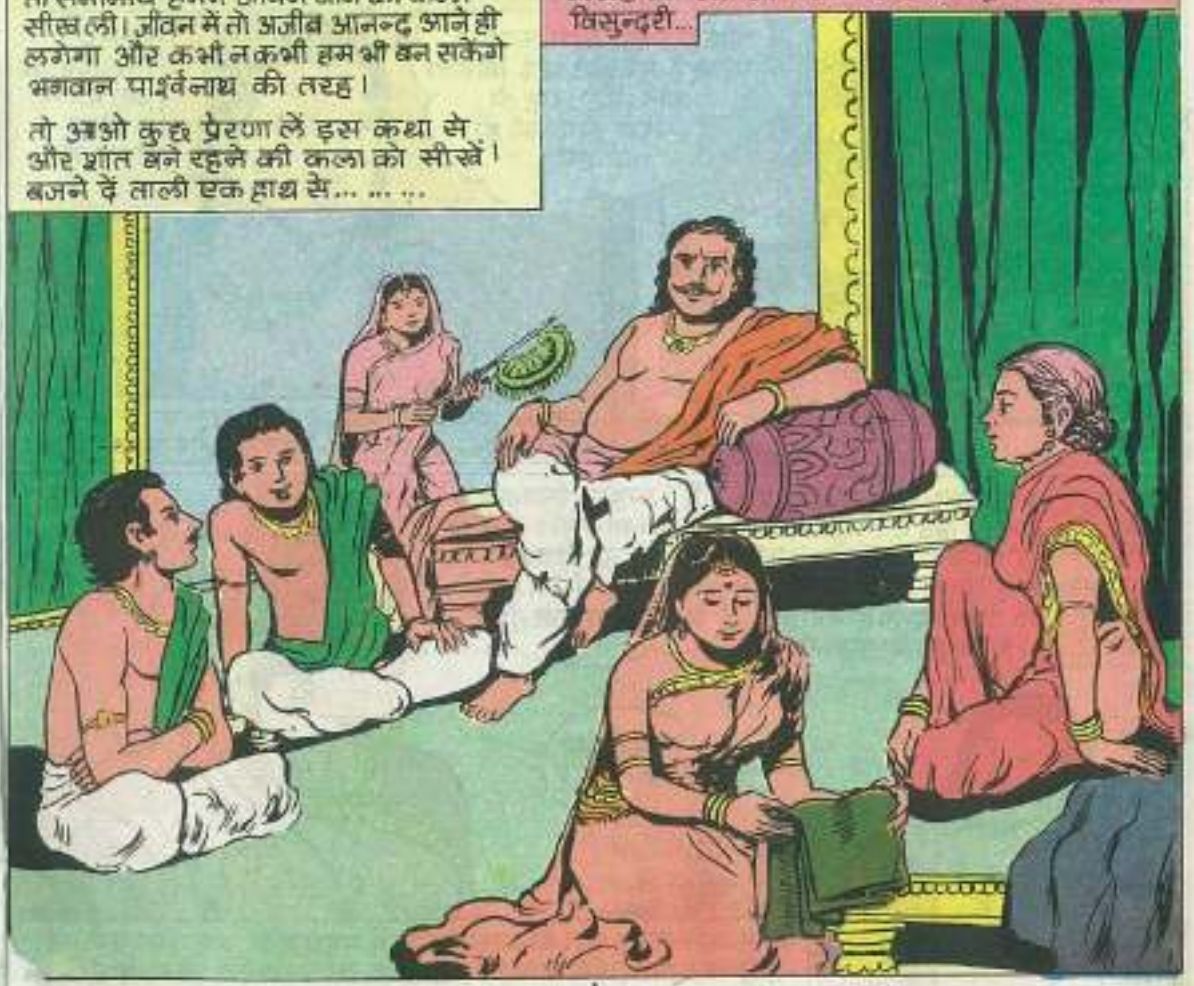
ताली एक हाथ से बजती रही

रेखांकन: बनेसिंह

पोदनपुर के राजा का नाम अरविन्द था। वह बड़ा धर्मात्मा था। उसका मंत्री था विश्वभूति। विश्वभूति की पत्नी थी अनुधरा जो बड़ी रूपवती व गुणवती थी। उनके दो पुत्र थे, बड़े का नाम कमठ बड़ा दुराचारी, दुष्ट स्वभाव वाला। छोटे का नाम मरुभूति - बड़ा सज्जन। परन्तु दोनों में अटूट प्रेम। कमठ की स्त्री थी वरुणा और मरुभूति की पत्नी विसुन्दरी...

ताली एक हाथ से बजती रही। क्या ये आपने सुना है या देखा है। यदि नहीं तो देखिये कैसे बजती रही एक हाथ से ताली? कमठ और मरुभूति दो भाई थे- सगे भाई। कई जन्मों तक कमठ का जीव मरुभूति के जीव के प्राण लेता रहा, परन्तु मरुभूति का जीव सदैव शांत बना रहा। एक तरफा बैर - सुनने में बड़ा अटपटा सा लगता है। परन्तु हुआ ऐसा ही। बैर करने वाला गिरता रहा, गिरता रहा भटकता रहा, भटकता रहा। और शान्त रहने वाला चढ़ता रहा, चढ़ता रहा, बढ़ता रहा बढ़ता रहा अपनी मंजिल की ओर। सबने देखा शांत बना रहने वाला एक दिन बन गया भगवान। तो क्या हम भी शांत नहीं बने रह सकते? चाहे कोई हमें गाली दे, बुरा भला कहे, मारे पीटे, यहां तक कि हमारे प्राण भी ले ले। यदि हमने शांत बने रहना सीख लिया, हर परिस्थिति में, तो समझिये हमने जीवन जीने की कला सीख ली। जीवन में तो अजीब आनन्द आने ही लगेगा और कभी न कभी हम भी बन सकेंगे भगवान पार्श्वनाथ की तरह।

तो आओ कुछ प्रेरणा लें इस कथा से और शांत बने रहने की कला को सीखें। बजने दें ताली एक हाथ से... ... ...



एक दिन विश्वभूति दर्पण में मुख देख रहे थे कि सिर पर सफेद बाल दिखाई पड़े .....

हैं! यह क्या? सफेद बाल! बस, अब तो मृत्यु आ ही गयी समझो! मुझे अपना कल्याण झटपट कर लेना चाहिए। चूका तो गया!

मंत्री विश्वभूति अपने छोटे पुत्र मरुभूति को लेकर राजा के पास पहुंचे।

राजन! मैं अब अपना कल्याण करना चाहता हूं। कृपया आप मुझे छुट्टी दीजिये... मेरा छोटा पुत्र आपकी सेवा में...

मंत्री जी, आप का पुत्र बड़ा होनहार है। मुझे कोई एतराज नहीं है।

कुछ दिन बाद राजा अरविन्द अपने नये मंत्री मरुभूति को लेकर वज्रवीरज राजा पर चढाई करने के लिए चले गये, पीछे .....

मरुभूति की स्त्री विसुन्दरी बाल सुखा रही थी। कमठ उसे देख रहा था

अहा हा! हा! क्या रूप है? परन्तु है मेरे छोटे भाई की स्त्री! कोई भी हो, यह तो मुझे मिलनी ही चाहिए।

कमठ विसुन्दरी को प्राप्त करने के लिए बेचैन हो उठा.....

कमठ ने अपने मित्र काल हंस से मिल कर एक गंभीर षड़यंत्र रचा... खुद आगे लेट गया और उसका मित्र...

कालहंस विसुन्दरी के पास पहुंचा और दुखी स्वर में बोला

अरी बहिन! कुछ सुना तुमने? तुम्हारे जेठ जी बहुत बीमार हैं। बगीचे में लेटे हैं। 'भाई भाई' पुकार रहे हैं। भाई नहीं तो उनकी पत्नी ही मेरा हाल चाल पूछने आजाती...

हैं! उन्होने ऐसा कहा! अब क्या करूं? वे तो यहां हैं नहीं। जेठ जी का व उनका बहुत प्रेम है। मेरे न जानेसे वे बहुत नाराज होंगे

अच्छा भैया चलती हूं।

विसुन्दरी काल हंस के साथ बगीचे में पहुंच गई। काल हंस उसे वहीं छोड़ कर गायब हो गया। उधर कमठ बहाना करके लेटा था ही.....


कमठ की बन आई। उस दुराचारी ने उसका सतीत्व ही लूट लिया! ... ...


जब राजा अरविन्द युद्ध से लौटे तब .....
मंत्री जी मैंने सुना है कि तुम्हारे बड़े भाई ने तुम्हारी पत्नी के साथ... अब क्या दंड दिया जाये उस पापी को ?
यह कैसे हो सकता है मंत्री जी। इतना बड़ा अपराध और दंड न दिया जाये। इस अपराध के लिए मृत्युदंड होना चाहिए, परन्तु आपके कहने के कारण मैं आज्ञा करता हूँ कि उसका काला मुंह करके गधे पर बैठा कर देश से बाहर निकाल दिया जावे।
राजन! वह मेरे बड़े भाई हैं। भूल हो गई होगी उनसे। कृपया उन्हें क्षमा कर दीजियेगा महाराज....
जो आज्ञा महाराज!


कमठ को देश निकाला दे दिया गया....
लोगों ने गधे पर चढ़ा कर काला मुंह कर के नगर के बाहर तक विदा किया...


वहां से अपमानित कमठ भूताचल पर्वत पर पहुंच गया जहां जटाधारी, शरीर पर राख लगाये, चिमटा लिए चारों ओर अग्नि जलाये एक तापसी बैठा था.....
महात्मन! मुझे भी अपना चेला बना लीजियेगा।
वत्स! जैसी तुम्हारी इच्छा

कमठ तापसी के आश्रम में रहने लगा। एक दिन वह दोनों हाथों पर एक शिला उठाये तपस्या कर रहा था कि...

भैया! मुझे क्षमा कर दो ना। मैंने राजा को बहुत समझाया परन्तु वह माने ही नहीं। मैं तुम्हें देखने को बहुत बेचैन था। बहुत ढूंढा। अब मिले हो। मुझे क्षमा करो... भैया क्षमा करो...

तुझे क्षमा करूं? दुष्ट कहीं का, तेरे ही कारण तो मुझे घोर अपमान सहना पड़ा। अब तू कहां जायेगा मुझ से बच कर.....

और कमठ ने वह शिला अपने छोटे भाई के मस्तक पर पटक दी। खून की धारा बहने लगी और मरुभूति वहीं मर गया..... ... ...

मरुभूति मर कर सल्लकी नाम के वन में वज्रघोष नाम का हाथी हुआ और कमठ तापसी मर कर उसी वन में सर्प बना... ... ...

और उधर राजा अरविन्द गढ़ की छत पर खड़े थे

अहा! हा! कितना सुन्दर महल है यह? क्यों न मैं भी इसी प्रकार का महल बनवाऊं। चलूं कागज़ लेकर चित्र बना लूं

राजा अरविन्द कागज लेकर आये परन्तु... बादल महल गायब था.....

हैं ! यह क्या ? वह महल कहां चला गया ? वह तो अब है ही नहीं। कितना क्षण भंगुर है यह द्रव्य ? क्या ऐसी ही दशा हमारी होगी ? मैं खुद, मेरा यौवन, मेरे ये भोग विलास ? क्या रखा है इनमें ?
"धौलन, गृह, गो, धन, नारी, हय गय जन आज्ञाकारी।
इन्द्रिय भोग छिन काई, सुरधनु चपला चपलाई ॥"

और वह राजा अरविन्द मुनि बन गये। एक दिन विहार करते हुए पहुंच गये उसी सल्लकी बन में। ध्यान में बैठे थे। वज्रघोष हाथी उपद्रव मचा रहा था। मुनि को बैठा देख कर ... ...

हैं ये कौन ? ये तो कोई परिचित से मालूम होते हैं। ओह याद आया। पहले भव में मैं इनका मंत्री मरुभूति ही तो था कितने शांत हैं ये और मैं कितना क्रोधी... चलूं इनके चरणों में बैठूं।

हे भव्य। तेरा कल्याण हो। तू धर्म को स्वीकार कर। संयम से रह। किसी जीव को मत मार। किसी को तकलीफ न दे। हथिनी से दूर रह। सब का भला सोच। तेरा कल्याण होगा।

हाथी ने धर्म अंगीकार किया। सूखे घास फूस पत्ते खाने लगा। किसी जीव को उससे कष्ट न हो, ऐसी क्रिया से रहने लगा। हथिनी से दूर रहने लगा

एक दिन बड़ी प्यास लगी और चल दिया वेगवती नदी की ओर.....

हैं यह क्या ? आया तो था यहां पानी पीने, परन्तु फंस गया हूं कीचड़ में। इससे निकलना नामुमकिन है। मृत्यु निश्चित है। ऐसे में मुझे चाहिए कि मैं शांत परिणामों से मरूं, खाना पीना छोड़ दूं। और ... ...

हाथी बैठ गया शांतचित्त होकर मानों समाधिमरण में बैठा हो - इतने में कमठ के जीव सर्प ने उसे डंक मारा और वह मर गया.....

हाथी मर कर आरहतें स्वर्ग में प्रभाप्रभ देव हुआ....

हैं ! यह क्या ? मैं यहां कहां ?

..ओह ! ध्यान आया - मैं पहले भव में हाथी था - धर्म धारण किया, संयम से रहा, मरते समय सन्यास लिया, उसी का यह सब फल है। मुझे अब भी भगवान जिनेन्द्र देव की पूजा पाठ आदि में ही लगे रहना चाहिए।

इस प्रकार पूरा जीवन -१६ सागर की आयु - एक बहुत लम्बा समय धर्म ध्यान में ही बिताया उस श्रीप्रभ देव ने वहां पर इंद्रिय सुख ही सुख - १६००० वर्ष बाद भूख लगती तो कण्ठ से अमृत झर जाता और सांस भी लेना पड़ता तो १६ पखवाड़े के बाद। वहां की आयु पूरी कर के पूर्व विदेह क्षेत्र में विद्युतगति भूपाल की विद्युत माला रानी के अग्निवेग नामक पुत्र हुआ।

बड़ा होने पर अग्निवेग ने मुनि दीक्षा ले ली। एक दिन वह मुनि गुफा में ध्यान मग्न बैठे थे। वहां पर एक अजगर आया। यह अजगर वही कमठ का जीव था जो सल्लकी वन में सर्प हुआ था। सर्प मर कर खोटे परिणामों व बदले के भावों के कारण पांचवे नरक में गया था। वहां से मर कर वो यहां अजगर हुआ था। मुनि को ध्यान मग्न देख कर फिर अजगर को वैर भाव पैदा हुआ और मुनि महाराज को डंक मार कर उनका काम तमाम कर दिया।

मर कर मुनि महाराज सोलहवें स्वर्ग में देव हुए ... ...

सोलहवें स्वर्ग की आयु पूरी करके अश्वपुर नगर के राजा वज्रवीरज की पटरानी विजया के वज्रनाभि पुत्र हुए ..... वज्रनाभि चक्रवर्ति बने। अटूट सम्पति- १४ रत्न, ९ निधि १८ करोड़ घोड़े ८४ लाख रथ ९६ हजार रानी छःखण्ड का अधिपति- सब कुछ तो था उसके पास। तो भी धार्मिक क्रियाओं में ही लगा रहता था।

बीज राख फल भोगते, ज्यों किसान जग मांही।
त्यों चक्री नृप सुख करे, धर्म बिसारे नाहीं ॥

एक दिन.....

हे कृपासिंधु! मैं इस कर्मबंधन से छूटना चाहता हूं। कृपया मुझे धर्म का उपदेश देकर कृतार्थ कीजियेगा

हे भव्य! तूने भला विचारा। धर्म ही शरण है। धर्म ही हित है। संसार अशरण है, अनीति अशुचि है। भोग क्षण भंगुर है। संसार में सुख है ही नहीं। सुख तो निराकुलता मोक्ष में है। और मोक्ष प्राप्ति बिना मुनि बने हो ही नहीं सकती।

तो हे महात्मन, मुझे वही मुनि दीक्षा दे दीजिये ना जिससे मैं आवागमन से छूटने का उपाय कर सकूं

वत्स! तेरा कल्याण हो।

वज्रनाभि मुनि बने, सब कुछ छोड़ दिया। जंगल में घोर तपश्चर्या कर रहे थे कि एक भील ने उन्हें देखा भील और कोई नहीं था। वही कमठ का जीव था जो अजगर के शरीर को छोड़ कर 22 सागर तक छठे नरक में रहा और वहां से निकल कर यहां भील हुआ। मुनि को देख कर...

हैं! यह कौन है? यह तो वही मेरा पुराना कई भवों से चला आया शत्रु है। अब मेरे से बच कर कहां जायेगा आज तो मैं इसको...

मुनि मर कर मध्यम ग्रैवेयक में अहमिन्द्र हुए और भील सातवें नरक गया। यही तो है अच्छे बुरे भावों का फल ... ...

वह अहमिन्द्र आयु पूर्ण करके अयोध्या के राजा वज्रबाहु की रानी प्रभावती के आनन्द कुमार नाम का पुत्र हुआ। जवान हुआ, विवाह हुआ पिता ने राज्याभिषेक किया। एक दिन राज्य सभा में आनन्द कुमार राजा बैठे थे कि... ... ...

महाराज की जय हो! महाराज! आज कल अष्टान्निका पर्व चल रहा है। आपभी जिनेन्द्र भगवान का पूजन रचाकर पुण्य लाभ कमाइयेगा

मंत्री जी, आपने अच्छी याद दिलाई! चलो जिन मंदिर में पूजन करने चलें

एक दिन... ... हें यह क्या? सफेद बाल! मृत्यु का मियादी वारंट! बुढ़ापा तो आ ही गया, मृत्यु भी बहुत जल्दी आ ही जायेगी! क्या ही अच्छा हो झट पट गृहस्थी के झंझट से छूट कर मुनिदीक्षा ले कर कल्याण मार्ग में लग जाऊं!

बस राजा आनन्द दिगम्बर मुनि बन गये, उत्तम क्षमादि १० धर्मों का पालन करने लगे, अनित्यादि १२ भावनाओं का चिन्तन किया, २२ परिषह जीते, १६ भावनायें भाई, जिनके भाने से तीर्थंकर प्रकृति का बंध किया... ... ...

एक दिन आनन्द मुनि घोर तपस्या कर रहे थे कि एक शेर उन पर झपटा। यह शेर उसी कमठ का जीव था जो बैर भाव के कारण सातवें नर्क से निकल कर इसी वन में शेर हुआ। मुनि को देख कर ....

अरे यही तो मेरा कई जन्मों का शत्रु है। अब कहां जायेगा मेरे से बच कर। मारूं झपट्टा और कर दूं इसका काम तमाम।

इतना उपसर्ग होने पर भी शान्ति से प्राण छोड़ते हैं मुनि आनन्द और शुभ परिणामों के कारण पहुंच जाते हैं आनत नाम के स्वर्ग में वहां पर जब उनकी आयु ६ महीने शेष रह गई तब वहां सौधर्म इन्द्र ने कुबेर को बुलाकर मंत्रणा की व आगे की व्यवस्था के लिए आदेश दिया....

देखो कुबेर! आनत स्वर्ग के इन्द्र की आयु केवल ६ महीने की बाकी रह गई है। वह वाराणसी में २३ वें तीर्थंकर होने वाले हैं। तुम वहां चले जाओ नगरी को खूब सजाओ और १५ महीने तक प्रतिदिन रत्नों की वर्षा करो

जो आज्ञा महाराज

कुबेर द्वारा वाराणसी नगरी में नित्य ३½ करोड़ रत्नों की वर्षा होती रही। ६ महीने बीतने पर एक दिन रात्रि के पिछले पहर में राजा अश्वसेन की रानी वामा देवी ने १६ स्वप्न देखे... प्रातः होने पर रानी ने राजा से स्वप्नों की बात बताई और पूछा





स्वर्गों के देवतागण अपने अपने वाहनों पर वाराणसी की ओर जयजय कार करते हुए चल दिये। वहां पहुंच कर ...

आपकी जय हो। आप धन्य है! आप के यहां 23 वें तीर्थंकर माताजी के गर्भ में आगये हैं। आप बड़े पुण्यशाली हैं

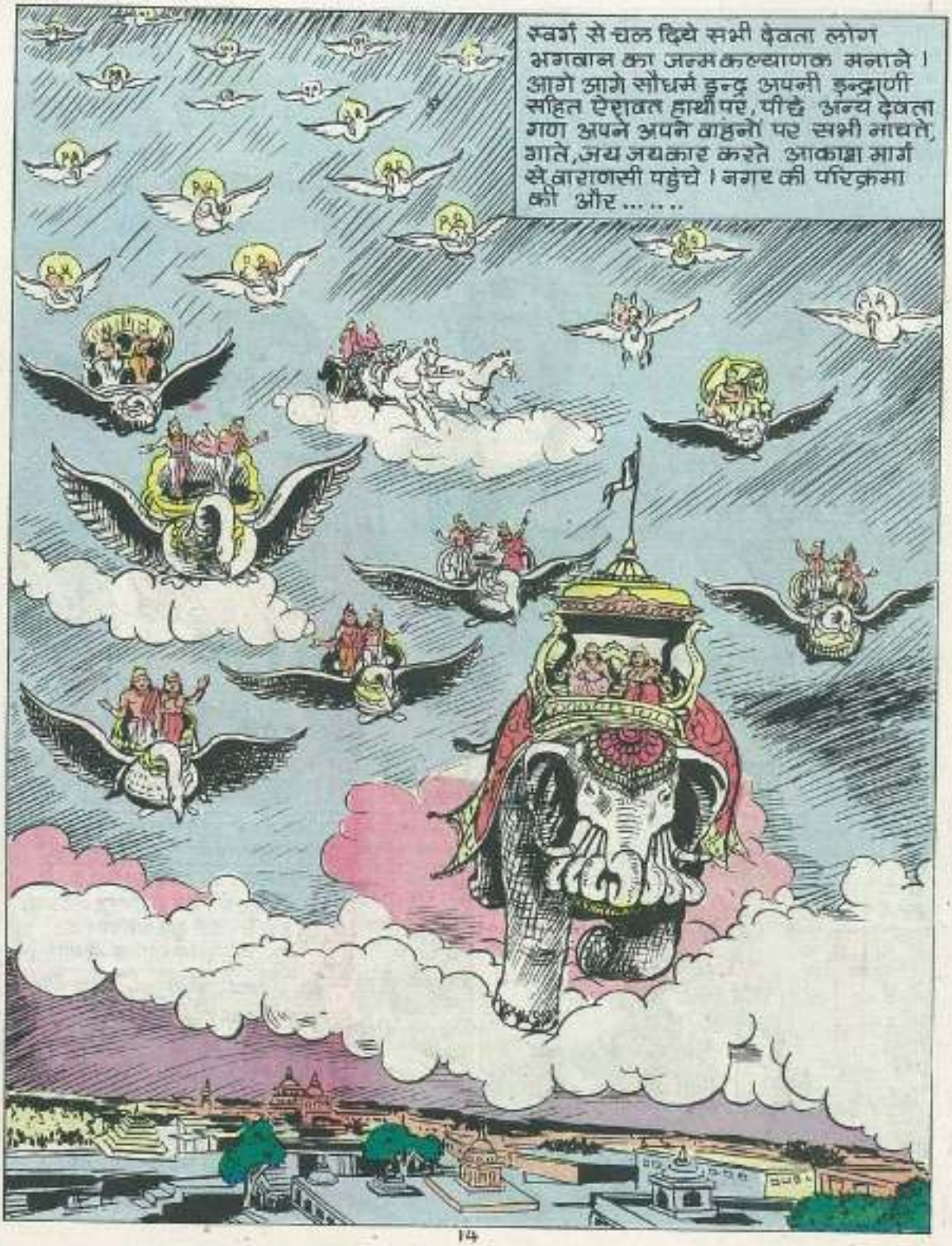
हम माता जी की सेवा के लिए देवियो को छोड़ कर जा रहे हैं।

इससे 9 महीने बाद पोष वदी 11 को पहले स्वर्ग में ... ...

है। आज मेरा यह इन्द्रासन क्यों कांप रहा है! ओहो! आज तो वाराणसी में भगवान पार्श्वनाथ का जन्म हुआ है।

अपने आसन से उठ कर 9 पग आगे चल कर सौधर्मइन्द्र ने भगवान को परोक्ष नमस्कार किया और फिर...

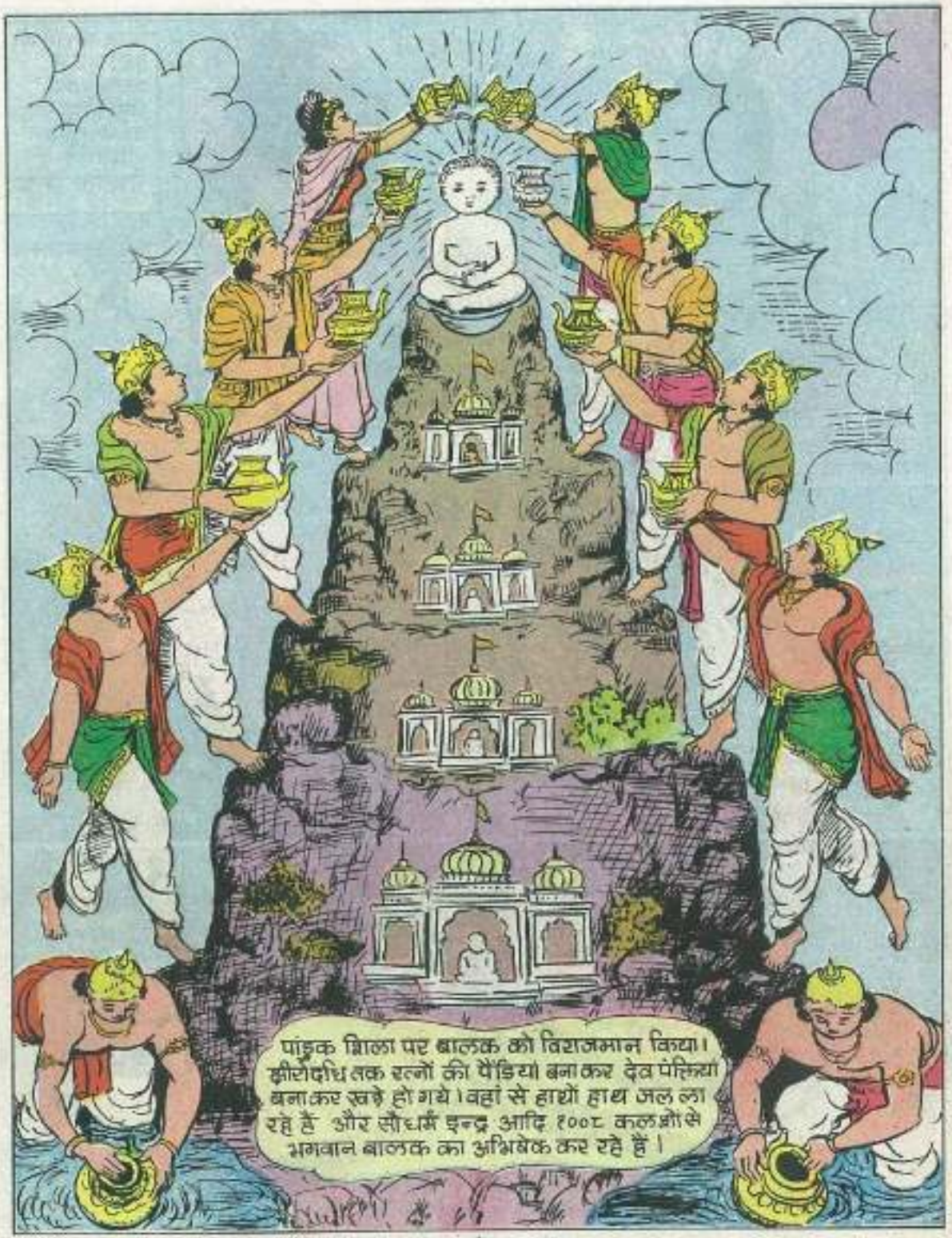
अरे सुनो। आज वाराणसी में 23 वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का जन्म हुआ है। चलें वहां भगवान का जन्म कल्याणक मनायें।


स्वर्ग से चल दिये सभी देवता लोग
भगवान का जन्मकल्याणक मनाने।
आगे आगे सौधर्म इन्द्र अपनी इन्द्राणी
सहित ऐरावत हाथी पर, पीछे अन्य देवता
गण अपने अपने वाहनों पर सभी नाचते,
गाते, जय जयकार करते आकाश मार्ग
से वाराणसी पहुंचे। नगर की परिक्रमा
की ओर .....

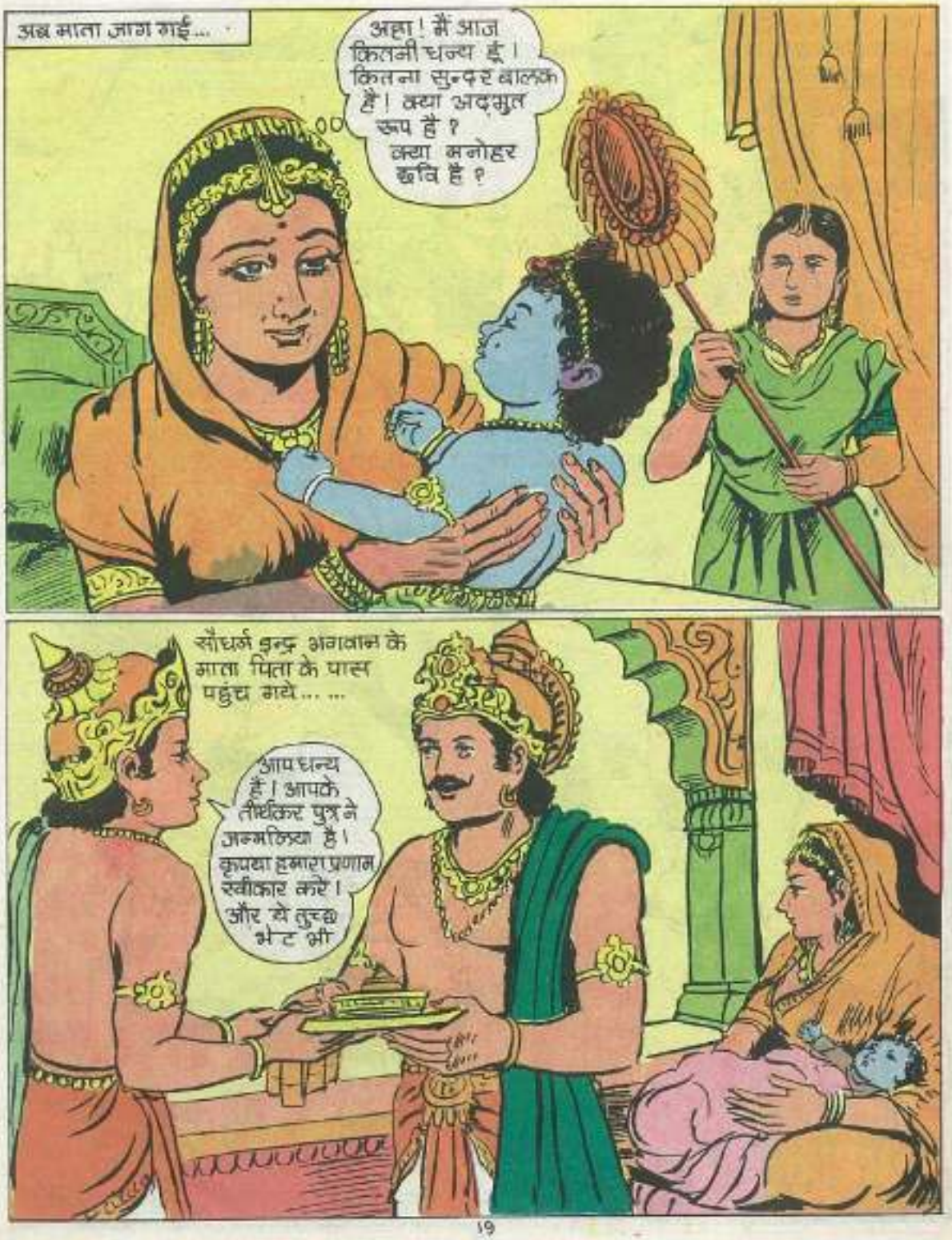

राजा अश्वसेन के महल में सौधर्म इन्द्र की इन्द्राणी प्रसूतिगृह में गई
अहा! हा! हा! आज मैं निहाल हो गई। चलूं, बालक को ले चलूं, अपने पति को सौंप दूं, और फिर चलें पाण्डुक शिला पर बालक के जन्माभिषेक करने के लिए। परन्तु यदि बालक को उठाया तो माता को कष्ट होगा! अतः इतनी देर के लिए माता को निद्रा में सुला दूं और एक मायामई बालक को उनके निकट लिटाकर भगवान बालक को उठा लूं।


इन्द्राणी बालक को सौधर्म इन्द्र को सौंपते हुए ...
प्राणनाथ! लो इन्हें लो। कितना सुन्दर बालक है? धन्य हुए हैं हम आज।
बालक क्या है, कमाल का रूप है इनका। मैं तो देख कर तृप्त ही नहीं हो पा रहा हूं। शायद १००० नेत्रों से देख कर तृप्त हो सकूं
लो चलो १००० नेत्र बना लेता हूं
ताकि नेत्रों के द्वारा इन्हें अपने हृदय में उतार सकूं।


भगवान बालक को लेकर सौधर्म इन्द्र ऐरावत हाथी पर बैठा है। ईशान इन्द्र ने छत्र लगाया - सनत्कुमार व महेन्द्र चमर ढोर रहे हैं। सब देव देवियां गीत गाते, नृत्य करते पुष्प वृष्टि करते, जुलूस के रूप में पांडुक शिला की ओर जा रहे हैं .....


पांडुक शिला पर बालक को विराजमान किया। क्षीरोदधि तक रत्नों की पैंड़ियां बनाकर देव पंक्तियां बनाकर खड़े हो गये। वहां से हाथों हाथ जल ला रहे हैं और सौधर्म इन्द्र आदि १००८ कलशों से भगवान बालक का अभिषेक कर रहे हैं।


फिर सौ धर्म की इन्द्राणी ने बालक को कपड़ों से पोंछा वस्त्राभूषण पहनाये। तिलक किया।
जुलूस चल दिया वाराणसी को ... ...
इन्द्राणी प्रसूतिगृह में गई बालक को माता वामा देवी के पास लिटाया...


अब माता जाग गई...
अहा! मैं आज कितनी धन्य हूं। कितना सुन्दर बालक है! क्या अद्भुत रूप है? क्या मनोहर छवि है?
सौधर्म इन्द्र भगवान के माता पिता के पास पहुंच गये... ...
आप धन्य हैं! आपके तीर्थंकर पुत्र ने जन्म लिया है। कृपया हमारा प्रणाम स्वीकार करें। और ये तुच्छ भेंट भी


राजा अश्वसेन ने भी
बालक तीर्थंकर का
जन्मोत्सव मनाया


अब तो बालक प्रभु बाल क्रीड़ा करने लगे। देवता लोग भी बालक का
रूप बनाकर उनके साथ खेलते खाते, खुशियां मनाते, नाचते गाते थे।

जब पार्श्वकुमार १६ वर्ष के हुए तब एक दिन.....

बेटा अब तुम जवान हो गये हो, अब तो यही उचित है कि तुम विवाह कर लो और गृहस्थी के सुख भोगो।

बेटा मैं कब से स्वप्न संजो रही हूँ कि घर में एक छोटी सी प्यारी सी बहू आयेगी।

माताजी, मेरी आयु केवल १०० वर्ष की है। ३० वर्ष की आयु में मुझे घर छोड़ ही देना है। फिर केवल १६ वर्ष के लिये मैं गृहस्थी के जंजाल में क्यों फंसू। मैं तो इस बंधन में बिल्कुल भी बंधना नहीं चाहता। कृपया मुझे क्षमा कीजियेगा।

और उधर..... । कमठ का जीव जिसने शेर की पर्याय में मुनि आनन्द कुमार को अपने पंजों से मार डाला था, मुनि हत्या के पाप से पांचवें नर्क में गया- वहां पर १६ सागर की आयु पूरी की। वहां से मर कर ३ सागर तक और और जगह जन्म धारण कर कर के नाना दुःख सहे। फिर किसी पुण्योदय से महीपाल-पुर में महीपाल राजा हुआ। महीपाल राजा की पुत्री वामादेवी ही भगवान पार्श्वनाथ की माता थी। जब महीपाल राजा की पटरानी का देहान्त हो गया तो वह राजा महीपाल दुखी हो कर तापसी बन गया। और पंचाग्नि तप करने लगा। एक दिन वह पंचाग्नि तप कर रहा था कि राजकुमार उधर से निकले-

अरे! यह तुम क्या कर रहे हो? जिस लक्कड़ को तुम जला रहे हो उसमें तो नाग नागनी का जोड़ा है!

अरे तुझे बड़ा पता है कि इसमें क्या है? तू कल का छोकरा क्या तू सर्वज्ञ है? बूढ़े मैं तेरा नाना और तपस्वी! पर तू इतना उद्दन्ड कि मुझे नमस्कार तक भी नहीं किया।

हाथ कंगन को आरसी क्या? तुम इसमें फाड़ कर देख लो।

अच्छा, इसे अभी फाड़ता हूँ।


तापसी ने उसी क्षण कुल्हाड़ी से लक्कड़ को फाड़ डाला ... उसमें से अधजले नाग नागिन निकले
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं,
णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं,
णमो लोए सव्व साहूणं
? अरे ? ?
Ooo
आयु पूर्ण होने पर यही तापसी मरकर संवर नाम का ज्योतिषि देव हुआ
णमोकार मंत्र को सुन कर नाग नागिनी के परिणामो में सुधार हुआ और मर कर वे देव लोक मे धरणेन्द्र व पद्मावती बने।

जब राजकुमार पार्श्वनाथ ३० वर्ष के हुए, एक दिन अयोध्या के राजा जयसेन का दूत पार्श्वनाथ को भेंट देने के लिए आया.....

आपकी जय हो! अयोध्या के राजा जयसेन ने आपके चरणों में यह भेंट भिजवाई है, कृपया स्वीकार कीजियेगा।

यह अयोध्या कौनसी नगरी है? बताइये तो सही!

महाराज, यह अयोध्या वह नगरी है जहां पर देवाधिदेव प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने जन्म लिया था

है! भगवान ऋषभदेव की जन्म भूमि। भगवान ऋषभदेव ने तो कर्मों का नाश करके मोक्ष को प्राप्त कर लिया था.... ... और मैं अभी भी संसार में फंसा हुआ हूं! मुझे भी घर बार छोड़ कर अपना कल्याण कर लेना चाहिए। देर नहीं करनी चाहिए। अच्छा चलूं अब मुनि बनने...

राजकुमार पार्श्वनाथ... वैराग्य की भावना का चिन्तन कर कल्याण मार्ग पर अग्रसर हो गये...

तभी पांचवें स्वर्ग से लौकान्तिक देव आ पहुंचे। वे भगवान के तप कल्याणक में ही आते हैं। आठ ब्रह्मचारी होते हैं और अगले भव में मनुष्य बन कर मोक्ष प्राप्त करते हैं

वाह खूब! आपने भला विचारा महाराज! आपको यही योग्य है! आप धन्य हैं।

देवों ने पालकी सजाई उसमें पार्श्वनाथ को बैठाया और पालकी उठाने लगे कि.....

देवताओं ठहरो, पालकी हम उठायेंगे। आपको क्या हक है पालकी उठाने का?

हम पालकी के उठाने के हकदार क्यों नहीं हैं भाई? भगवान के गर्भ कल्याणक में हम आये, जन्मोत्सव हमने मनाया, फिर पालकी हम क्यों न उठायें


नहीं ! पालकी हम उठायेंगे। वे भी मनुष्य हैं और हम भी मनुष्य फिर ये हक हमारा होता है।
नहीं ! दूर हट जाओ। पालकी हम उठायेंगे। हम तुम से बहुत शक्तिशाली हैं अतः हमारा हक है।
तुम शक्तिशाली हो तो बनकर दिखा दो मुनि, जो यह बनने जा रहे हैं।
भैया, यहां हम विवश हैं। हम मुनिव्रत धारण नहीं कर सकते। संयम धारण करने की शक्ति तो तुम में ही है। हम तुम से भीख मांगते हैं। हमें कुछ क्षण के लिए मनुष्य भव देदो चाहे बदले में हमारा सारा वैभव ले लो।


निर्णय के अनुसार पालकी पहले भूमिगोचरी राजाओं ने उठाई, कुछ दूर चल कर विद्याधरों ने, और कुछ दूर चलने के बाद नम्बर आया देवों का।

पालकी को लेकर देव पहुंच गये वन में। वहां पर वट वृक्ष के नीचे बैठ गये राजकुमार पार्श्वनाथ। वस्त्राभूषण उतार कर फेंक दिये, केशों को हाथ से उखाड़ डाला और बन गये दिगम्बर मुनि....

एक दिन मुनि पार्श्वनाथ आहार के लिए उठे। पहुंच गये राजा ब्रह्मदत्त के यहां निर्विघ्न आहार हुआ। पंचाश्चर्य हुए उसी समय देवताओं ने पुष्प वृष्टि की


कुछ समय बाद एक दिन मुनि पार्श्वनाथ ध्यानस्थ बैठे थे अहिक्षेत्र में, ऊपर से जा रहा था कमठ का जीव संवर नाम का देव अपने विमान में। विमान मुनि के ऊपर आया और अटक गया। रुक गया।
हैं। मेरा विमान क्यों रुक गया?
अरे नीचे वही मुनि बैठा है जो पहले भव में मेरा शत्रु था। इसने मेरा बड़ा अपमान किया था। अब लूंगा इससे बदला दिल खोल कर देखूं कहां जाता है मुझ से बच कर। आज तो सारी कसर निकाल ही लूंगा।
संवर देव ने मुनि पार्श्वनाथ पर हमला शुरू किया... भीषण वर्षा... तूफान... अग्नि वर्षा, पत्थर गिरे परन्तु मुनि ध्यान-मग्न बैठे रहे

नाग नागिनी के जीव जो धरणेन्द्र पद्मावती बन गये थे, अचानक उनका आसन हिलने लगा.....

है! यह क्या? आसन क्यों डोल रहा है? आज हमारे उन परोपकारी पर उपसर्ग हो रहा है, जिन्होंने हमारे प्राण बचाये थे और हमें णमोकार मंत्र सुनाया था। जिसके प्रताप से हम यहां उत्पन्न हुए हैं। चलें हमें उनका उपसर्ग फौरन दूर करना चाहिए

और दोनों आ गये अहिक्षेत्र में। धरणेन्द्र ने फन फैला कर मुनि पार्श्वनाथ को अपने ऊपर बैठा लिया और पद्मावती ने उनके ऊपर अपने फन से छत्र लगा लिया बीच में मुनि पार्श्वनाथ ध्यानस्थ बैठे हैं।

मुनि पार्श्वनाथ ध्यानमें दृढ़ रहे चार घातिया कर्मों का नाश होगया और बन गये भगवान-तीर्थंकर केवल ज्ञानी - अरहंत ।

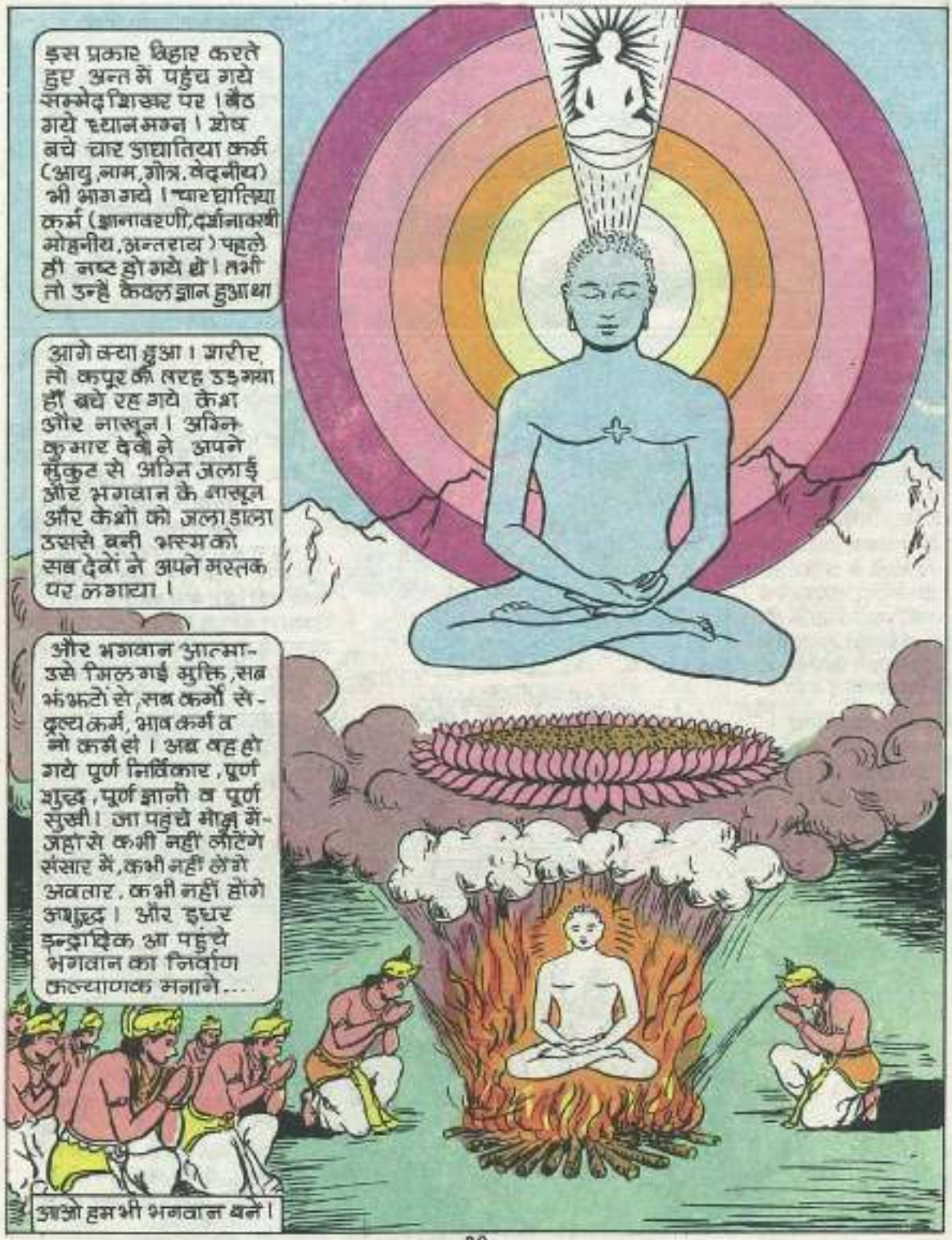
और संवरदेव भाग गया

इन्द्र अपने देवता लोगों के साथ चल दिये भगवान पार्श्वनाथ का केवलज्ञान कल्याणक मनाने के लिए। और इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने समवशरण बना डाला - समवशरण यानि सभामण्डप- बीच में भगवान, चारों ओर १२ कोठों में अलग अलग देव, मनुष्य, तिर्यञ्च, स्त्री आदि- यहां जीवों में बैर विरोध नहीं, भगवान के दुर्भाव चारों ओर से, रात दिन का भेद नहीं ।

भगवान पार्श्वनाथ समवशरण में -उनकी दिव्य ध्वनि खिर रही है। सब बैठे अपनी अपनी भाषा में समझ रहे हैं। वहीं पर बैठा है देवों के लोक में वही संवर देव ।

अहाहा ! कितना सुन्दर उपदेश है। मैं कितने जन्मों से इनसे बैर कर कर के पापबंध करता रहा नाना प्रकार के दुख सहता रहा। और इधर ये - बिल्कुल शांत बने रहे। परिणाम स्वरूप ये आज भगवान बने हुए विराजमान हैं। क्या मैं भी ऐसा बन सकता हूं? क्यों नहीं! बैर भाव छोड़ दूं। सही विश्वास बना लूं। मैं क्या हूं ? मेरा क्या स्वरूप है ? इसकी सच्ची श्रद्धा कर लूं। इसका ऐसा ज्ञान कर लूं और इसी को प्राप्त करने में लग जाऊं। इस भव में न सही अगले भवों में मुनि बन कर मैं अपना कल्याण अवश्य कर लूंगा

भगवान पार्श्वनाथ का विहार होने लगा। जहां जाते नया समवशरण बन जाता। मार्ग में सब प्रबन्ध देवों का। आगे आगे देवता लोग भूमि साफ करते हुए, गंधोदक छिड़कते हुए, पुष्पवृष्टि करते हुए चल रहे हैं। सबके आगे धर्म चक्र चल रहा है, आकाश में गमन हो रहा है, देवता लोग गा रहे हैं नाच रहे हैं। बजा रहे हैं दिव्य बाजे


इस प्रकार विहार करते हुए अन्त में पहुंच गये सम्मेद शिखर पर। बैठ गये ध्यान मग्न। शेष बचे चार अघातिया कर्म (आयु, नाम, गोत्र, वेदनीय) भी भाग गये। चार घातिया कर्म (ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी मोहनीय, अन्तराय) पहले ही नष्ट हो गये थे। तभी तो उन्हें केवल ज्ञान हुआ था
आगे क्या हुआ। शरीर तो कपूर की तरह उड़ गया हाँ बचे रह गये केश और नाखून। अग्नि कुमार देवों ने अपने मुकुट से अग्नि जलाई और भगवान के नाखून और केशों को जला डाला उससे बनी भस्म को सब देवों ने अपने मस्तक पर लगाया।
और भगवान आत्मा- उसे मिल गई मुक्ति, सब झंझटों से, सब कर्मों से - द्रव्य कर्म, भाव कर्म व नो कर्म से। अब वह हो गये पूर्ण निर्विकार, पूर्ण शुद्ध, पूर्ण ज्ञानी व पूर्ण सुखी। जा पहुंचे मोक्ष में- जहां से कभी नहीं लौटेंगे संसार में, कभी नहीं लेंगे अवतार, कभी नहीं होंगे अशुद्ध। और इधर इन्द्रादिक आ पहुंचे भगवान का निर्वाण कल्याणक मनाने....
आओ हम भी भगवान बनें।

णमोकार मंत्र

अनादि मंत्र

णमो अरहंताणं	: अरहंतों को नमस्कार।	जिनके भूख, प्यास, बुढ़ापा, रोग, जन्म, मरण, भय, मद, मोह, राग, द्वेष, और शोक आदि दोष नाश हो गए हों, उन्हें अरहंत कहते हैं।
णमो सिद्धाणं	: सिद्धों को नमस्कार।	जो संसार के बन्धन से छूट कर सदा के लिए परमात्मपद पा गए हों उन्हें सिद्ध कहते हैं।
णमो आइरियाणं	: आचार्यों को नमस्कार।	जो संसार की वासनाओं को छोड़ कर स्वयं साधु पद में रहते हुए अन्य साधुओं को मार्गदर्शन देते हैं उन्हें आचार्य कहते हैं।
णमो उवज्झायाणं	: उपाध्यायों को नमस्कार।	साधुओं के पठन–पाठन कराने वाले साधु को उपाध्याय कहते हैं।
णमो लोए सव्वसाहूणं	: लोक के सभी साधुओं को नमस्कार।	संसार की वासनाओं से उदासीन, सब जीवों मे समान भाव रखने वाले और सदा ज्ञान, ध्यान, तप में लीन महात्मा को साधु कहते हैं।

यह मूल मंत्र प्राकृत में है. इसके प्रत्येक पद में वर्णित गुण अनादि हैं और इसलिए यह मंत्र भी अनादि है। इसे किसी व्यक्ति ने नहीं बनाया. ना ही यह किसी व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित है–यह तो सार्वजनीन है क्योंकि यह मानव मंत्र है।


मन्जू और मुकेश
बच्चों को क्या पढ़ना चाहिए
पापा जी ! आप क्या पढ़ रहे हैं ?
बेटा ! मैं समयसार पढ़ रहा हूँ।
पापा जी ! समयसार क्या होता है ?
बेटा ! समयसार द्रव्यानुयोग का ग्रन्थ है तुम नहीं समझोगे।
तो हमारी समझ में क्या आएगा ?
बेटा ! पहले प्रथमानुयोग पढ़ो।
पापा जी ! प्रथमानुयोग क्या है ?
बेटा ! जिसमें महापुरुषों के जीवन चरित्र का वर्णन है वही प्रथमानुयोग है।
नमस्ते चाचा जी। देखो यह जैन कॉमिक्स हमारे पापा लाये हैं।
हाँ देखो ! कितना सरल उपाय प्रथमानुयोग समझाने का।
तब तो पापा जी आप भी इसे मँगवाइये ना
हाँ बेटा ! आज ही मनिआर्डर किये देता हूँ।

जैनाचार्यों द्वारा लिखित सत्य कथाओं पर आधारित

जैन चित्र कथा

आठ वर्ष से ८० वर्ष तक के बालकों के लिए

ज्ञान वर्धक, धर्म, संस्कृति एवं इतिहास की जानकारी देने वाली स्वस्थ, सुन्दर, सुरुचिवर्धक, मनोरंजन से परिपूर्ण आगम कथाओं पर आधारित जैन साहित्य प्रकाशन में एक नये युग का प्रारम्भ करने वाली एक मात्र पत्रिका

जैन चित्र कथा

ज्ञान का विकाश करने वाली ज्ञानवर्धक, शिक्षाप्रद और चरित्र निर्माणकारी सरल एवं लोकप्रिय सचित्र कथा जो बालक वृद्ध आदि सभी के लिए उपयोगी अनमोल रत्नों का खजाना, जैन चित्र कथा को आप स्वयं पढे तथा दूसरों को भी पढ़ावे।

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थ माला

संचालक एवं सम्पादक—धर्मचंद शास्त्री

श्री दिगम्बर जैन मंदिर, गुलाब वाटिका लोनी रोड, जि० गाजियाबाद

फोन 05762-66074

सौ० प्रेमलता पहाड़िया धमपत्नि श्री शिखर चन्द पहाड़िया
जयहिन्द इस्टेअ नं० २-ए, दूसरी मंजिल, भूलेश्वर, बम्मई - २

PAHARIA

- PAHARIA SILK MILLS PVT. LTD.
- SHIKHARCHAND AMITKUMAR
- PAHARIA INDUSTRIES
- PAHARIA TEXTILES COROPORATION
- PARAS SLIK INDUSTRIES
- SAPNA SILK MILLS
- SHIKHARCHAND PREMLATA PAHARIA
- PAHARIA TEXTILES MILS PVT. LTD.
- PAHARIA TEXTILES INDUSTRIES
- PAHARIA UDYOG
- PAHARIA SYNTHETICS
- VARUN ENTERPRISES
- ANAND FABRICS
- PANCHULAL NIRMALDEVI PAHARIA

Kaushal Silk Mills Pvt. Ltd.

FACTORY :
875, KAROLI ROAD, OP. PAHARIA COMPOUND BHIWANDI, DIST. THANE
TEL : 34243, 22819, 22816 FAX : (02522) 31987

REGD. OFF.
JAI HIND ESTATE NO. 2-A, 2ND FLOOR, DR. A.M. ROAD, BHULESHWAR, BOMBAY- 400 002
TEL : 2089251, 2053085, 2050996 FAX : 2080231

Printed at : SAINANI OFFSET © 2283885